श्रद्धेय डा॰ विश्वामित्र जी महाराज के मुखारविन्द से .....
श्रीरामशरणम्, दिल्ली, 26, 27 अप्रैल 2008

गुरु वह है साधकजनो ! जो शिष्य को, साधक को सांसारिक सुख नहीं बांटता फिरता अपितु उन सबके कल्याण की सोचता है। जो स्वयं संसार से निकला हुआ है, औरों को संसार से निकाल देता है, उसी को गुरु कहा जाना चाहिए। जो स्वयं संसार में फंसा हुआ है और शिष्यों को जो संसार में फंसाता है, निकालता नहीं है, उसे गुरु कैसे कहा जाए?

आप सबसे साधकजनो! मेरा आध्यात्मिक सम्बन्ध ही बना रहे, मैं संसारी नहीं, मुझे संसारी सम्बन्धों और संसारी समस्याओं का ज्ञान भी नहीं है। मैं अपनी असमर्थता को, अपनी असक्षमता को देखते हुए, अपनी हार स्वीकार करता हुआ आज से मैं बाहर जहां पंक्तियां बना कर खड़े होते हैं, मैं खड़ा नहीं हुआ करुंगा। यहीं से प्रणाम करके सीधा ऊपर चला जाया करुंगा। आप से भी निवेदन करता हूं आप भी राम-राम जपते हुए श्रीरामशरणम् से तुरन्त प्रस्थान किया कीजिएगा ताकि आप को दूसरों को भड़काने वाली बातें करने का अवसर न मिले। ईर्ष्या की आग जो भीतर जल रही है उसकी भड़ास आप यहीं निकाल कर जाना चाहते हैं, घरों तक भी जाती है यह, लेकिन कम से कम इस स्थान पर आकर तो बचे रहिएगा। तोड़-फोड़, निन्दा-चुगली यहां आकर बहुत मंहगी पड़ती है, बहुत भारी पड़ती है। इसलिए मैंने यही निर्णय उचित समझा है कि मैं यहां खड़ा न होऊं और आप भी यहां न रुकें। सत्संग की समाप्ति हुई, मैं ऊपर चला जाऊं, आप सत्संग की समाप्ति के बाद अपने-अपने घरों को प्रस्थान किया कीजिएगा। मैं आज के बाद किसी को मिलूंगा नहीं। दीक्षा के लिए रविवार को मुझे रुकना पड़ता है, रुकूंगा लेकिन फिर देवियो और सज्जनो ! आप जी से हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूं, अपनी सांसारिक समस्याएं सुनाने के लिए मेरे पास न पधारिएगा। किसी की साधना सम्बन्धी कोई समस्या हो जरूर दर्शन दें। सत्संग के बारे में किसी ने कोई बात करनी है, बाहर से आए हैं जरूर मिलें। किसी को अधिष्ठान जी की आवश्यकता हो जरूर मिले। यदि कोई साधक असांसारिक बात मुझसे करना चाहे तो दीक्षा के बाद उनका हार्दिक स्वागत है। कोई भी साधक देशी या विदेशी अपनी सुविधा अनुसार मिलने का आग्रह न करे। मेरे साथ किसी को कोई Emergency नहीं है।

मैं इन कामों के लिए नहीं बना हुआ। 15 साल हो गए मुझे यह सब कुछ देखते-देखते और सहन करते। बस, आप से मेरा आध्यात्मिक सम्बन्ध ही रहना आप के लिए कल्याणकारी है। परमेश्वर करे यह थोड़ा सा सम्बन्ध जो है यही मैं आप जी से निभा सकूं। मैं आप के किसी काम नहीं आ सका, इस बात की मुझे बहुत शर्मिंदगी है। मैं किसी का रोग ठीक नहीं कर सका, किसी की आर्थिक सहायता नहीं कर सका। जो सहायता मैं कर सकता हूँ, जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे बनाया हुआ है उस सहायता की आज तक किसी को जरूरत ही नहीं पड़ी। हां, आगे कभी किसी को आध्यात्मिक सहायता की आवश्यकता हो और आप समझें कि मैं काम आ सकता हूँ, उन सब का हार्दिक स्वागत है। उन सबसे मैं मिलूंगा लेकिन संसारी बातों के लिए नहीं।

क्या हमें मनाली आने की इजाजत है ? 15 साल हो गए यह बात सुनते। मैं कैसे सक्षम हूँ इस बात का उत्तर देने में, मैं आज तक समझ नहीं पाया फिर मेरी तो बुद्धि भी अल्प है, आप तो बहुत बुद्धिमान intelligent लोग हो। परमेश्वर करे, भक्ति के मार्ग में, अध्यात्म के मार्ग में मैं आप के किसी काम आ सकूं।

ऐसों की बहुत प्रशंसा करता हूँ जो ऐसे भी पत्र लिखते हैं, लम्बा पत्र लिखा गया है, माफ करना। मुझे पता है इतना लम्बा पत्र पढ़ने में जितना तेरा समय व्यर्थ निकलेगा इतने समय में यदि तू किसी के लिए एक माला फेरेगा तो उसका कल्याण हो सकता है। ऐसे साधक भी हैं, और मैं उनकी insight की बहुत प्रशंसा करता हूँ।

Wedding Card मुझे देने का क्या अभिप्राय है ? मैं समझ नहीं पाया। सहर्ष लेता हूँ, आपको बधाई देता हूँ, कुछ पूछता हूँ आपसे। 15 साल में यह सब बातें मैं सिखा नहीं सका आप को, मुझे बहुत भारी कष्ट है अपनी असमर्थता पर, आप पर नहीं।

लगभग 60 वर्ष पहले की बात होगी साधकजनो ! पूज्यपाद् स्वामी जी महाराज लुधियाना में पधारे। आर्य समाज मन्दिर में ठहरे। पांच-छ: लोग उनके दर्शनार्थ गए, मिलने के लिए गए। स्वामी जी महाराज दो-चार दिन के बाद आर्य समाज छोड़ कर किसी के घर चले गए, कोई साधक जान पहचान वाले थे। वहां पांच की जगह दस आने शुरू हो गए। वहां से निकले तो जो दण्डी स्वामी का आश्रम है वहां चले गए। वहां पंद्रह हो गए। आखिर किसी ने पूछ लिया महाराज ! ऐसा क्यों कर रहे हो आप? पहले आर्य समाज से निकले, फिर यहां से निकले, फिर अब दण्डी आश्रम में पधारे हो। अब कहां जाओगे? स्वामी जी महाराज कहते हैं, भैया ! मुझे माफ करो। मुझे भीड़ अच्छी नहीं लगती । यह सब मेरे से सांसारिक बातों के लिए आशीर्वाद मांगने के लिए आते हैं। मैं क्या दूं इनको ? जो कुछ मेरे पास था जिसका मुकाबला ही कोई नहीं हैं, वह राम नाम, राम मंत्र मैं इनको दे चुका हूँ। आशीर्वाद मांगने पर जोर है, जपते नहीं हैं। सबके सामने स्वामी जी महाराज ने कहा, मुझे इनमें कोई दिखाई नहीं देता जिसके अन्दर राम मिलन की तड़प, आग लगी हुई हो।

यह सोच कर साधकजनो ! स्वामी जी महाराज की इस बात को ध्यान में रखते हुए यही सोचा कि यहां आकर यह तड़प हमारे अन्दर पैदा होनी चाहिए। राम-राम जपते हुए ऐसे सुन्दर स्थान में, ऐसे वातावरण में बैठ कर भी यदि सांसारिक समस्याएं ही व्यक्ति याद करता रहा तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा? इस लिए साधकजनो ! आप जी से प्रार्थना की है मैं अब सासांरिक बातें सुनने के लिए, सांसारिक समस्याएं सुनने के लिए खड़ा नहीं हुआ करुंगा। यह बातें यहां बैठे घूमती रहती हैं। तैयारी होती रहती है, यह यह बातें उसके साथ जाकर करनी हैं। मानो wastage of time.

परमात्मा ने मुझे आप जैसा संसारी नहीं बनाया। मिलना सांसारियों का आपस में होता है। यदि आप मुझे साधु संत मानते हो तो साधु संत से मिलना नहीं होता, उसका सत्संग करना होता है। यह भेद याद रखिएगा। मैं मिलने के लिए नहीं बना हुआ। परमात्मा ने मुझे संसारी मिलने वाला ही बनाना था तो फिर मुझे यहां बिठाने की आवश्यकता नहीं थी। अध्यात्म में सत्संग के समय परस्पर दर्शन ही मिलन है।

छोटी-छोटी बातें हैं हम यह पल्ले बांध कर रखें तो फिर लाभ ही लाभ है। इस हृदय में राम मिलन की तड़प जगे। इस तड़प को ही भक्ति कहा जाता है।

आज कृपया वही रुकें जिन्होंने कोई आध्यात्मिक बात मेरे से करनी हो। मेहरबानी करके आज तो सम्भवतया वही बातें याद आती होंगी जो आपने मेरे से करनी थी। आगे से यहां पर आओ तो यह स्थान परमात्मा को याद करने के लिए है, संसार को याद करने के लिए नहीं। कितने भाग्यवान हो आप, थोड़ा समय परमेश्वर ने कृपा करके आपको दिया है, जिस समय में संसार को भुलाया जा सकता है और परमात्मा को याद किया जा सकता है। उस समय का सदुपयोग करना चाहिए।